

प्रसवपूर्व देखभाल तथा इसका मातृत्व स्वास्थ्य पर प्रभाव: उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर
जिले के चयनित गाँवों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

**Antenatal Care and its Impact on Women's Health: A Sociological Study of
Selected Villages in Siddarthnagar District of Uttar Pradesh**

शोध सारांश

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय की समाजशास्त्र विषय में एम० फिल० उपाधि
हेतु प्रस्तुत

मास्टर ऑफ फिलॉसफी

(एम० फिल०)

शोधार्थिनी

सीमा

नामांकन संख्या 1306/16

शोध निर्देशक

डॉ० ब्रजेश कुमार



समाजशास्त्र विभाग

अम्बेडकर अध्ययन विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

विद्याविहार, रायबरेली रोड लखनऊ, उ०प्र०, भारत

2018

प्रस्तावना

गर्भावस्था के दौरान किये जाने वाली चिकित्सा प्रक्रियाओं व अन्य देखभाल को ही प्रसवपूर्व देखभाल के रूप में वर्णित किया जाता है। जन्म से पहले उचित स्वास्थ्य देखभाल ही एक स्वस्थ नवजात के जन्म कि पुष्टि करता है। इस देखभाल में संदेह मात्र कमी की जगह नहीं होनी चाहिए। गर्भधारण के पूर्व से लेकर अंत तक की उचित देखभाल स्वस्थ मातृत्व व शिशु का जन्म सुनिश्चित करता है। जन्मपूर्व देखभाल में , गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं के लिए जन्म के पूर्व कम से कम तीन प्रसूति जाँच , लोहा प्रफैलेक्सिस, टेटनस टॉक्सोइड वैक्सीन की दो खुराक, माताओं में एनीमिया का पता लगाने और उपचार, और उच्च जोखिम वाले गर्भधारण का पता लगा के उसकी सुरक्षा करना ।- गर्भवती महिलाओं का घर तथा अन्य स्वास्थ्य संस्था दोनों स्थानों पर प्रदान की जाती है भारत वर्ष से ज्यादा आबादी गांव में बसती है वहां स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने का प्रमुख साधन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ही है । इस प्रकार गर्भवती माताओं का प्रसव पूर्व सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर ही व्यवस्था की गई है कि गर्भवती महिलाओं को स्वस्थ कुपोषण से बचाने हेतु फल,

दूध, टॉनिक आदि का निःशुल्क वितरण किया जाता है तथा टिटनेस से बचाव के लिए निश्चित समय पर टिटनेस टाक्साइट का टीका लगाया जाता है । जन्मपूर्व देखभाल सेवाएं माता और नवजात शिशुओं के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए पहले कदम हैं। 2015 तक मिलेनियम विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह मुख्य घटक है। लेकिन विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जन्मपूर्व देखभाल सेवाएं प्रदान करने में भारत का प्रदर्शन खराब रहा है।

अध्ययन का महत्व एवं प्रासंगिकता

भारतीय महिलाओं की मातृ स्वास्थ्य स्थिति अन्य विकसित देशों की तुलना में अत्यंत निम्न है, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को बढ़ावा देना भारत सरकार के परिवार कल्याण कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। देश के विकास और सतत विकास के लिए, देश में प्रसवपूर्व देखभाल को बेहतर बनाने की आवश्यकता है। प्रसवपूर्व देखभाल की सहायता से सुरक्षित मातृत्व स्वास्थ्य, मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को कम किया जा सकता है और सहस्राब्दी विकास को प्राप्त किया जा सकता है।

उद्देश्य

- गर्भावस्था के समय महिलाओं में पोषण की स्थिति का अध्ययन।
- गर्भावस्था के समय गर्भवती महिलाओं द्वारा प्रयोग की जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं का अध्ययन।
- गर्भावस्था के समय पति तथा पारिवारिक सदस्यों द्वारा गर्भवती के देखभाल में सहभागिता का अध्ययन।
- प्रसवपूर्व देखभाल के मातृत्व स्वास्थ्य और शिशु स्वास्थ्य पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन।

उपकल्पना

- गर्भावस्था के समय महिलाओं में पोषण की स्थिति भी अपेक्षाकृत निम्न ही रहती है ।
- गर्भावस्था के समय गर्भवती महिलाएं चिकित्सा सुविधाओं का प्रयोग करने में असमर्थ हैं।
- गर्भावस्था में गर्भवती की देखभाल में पारिवारिक सहभागिता अपेक्षाकृत कम होती है।
- प्रसवपूर्व देखभाल से मातृत्व स्वास्थ्य व शिशु स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

अध्ययन पद्धति

प्रसवपूर्व देखभाल तथा इसका मातृत्व स्वास्थ्य पर प्रभाव: उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले के चयनित गाँवों का समाजशास्त्रीय अध्ययन नामक इस शोध प्रबंध में सिद्धार्थनगर जिले के परसा इमाद, रीवा, औसान कुइयाँ, सोतवा गाँवों गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य तथा पोषण की स्थिति तथा प्रसवपूर्व देखभाल का मातृत्व स्वास्थ्य व शिशु स्वास्थ्य पर विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। गर्भावस्था में गर्भवती की देखभाल में पारिवारिक सहभागिता का भी विश्लेषण इस अध्ययन में भी शामिल है।

ANC गर्भावस्था से संबंधित स्वास्थ्य देखभाल को संदर्भित करता है, जो प्रायः एक डॉक्टर, एएनएम, अन्य कुशल स्वास्थ्य कार्यकर्ता तथा पारिवारिक सदस्यों द्वारा किया जाता है। ANC गर्भावस्था की जटिलताओं तथा उसके संकेतों की निगरानी के लिए, और गर्भावस्था की पूर्व मौजूदा और समवर्ती समस्याओं के इलाज के लिए होता है। ANC के समय गर्भावस्था के दौरान आहार, प्रसव देखभाल, प्रसवपूर्व देखभाल और संबंधित मुद्दों और जटिलता निवारक देखभाल पर सलाह और परामर्श प्रदान किया जाता है।

शोध विधियाँ

अध्ययन क्षेत्र

उद्देश्यपूर्ण रूप से उत्तर प्रदेश राज्य के सिद्धार्थनगर जिले के चार गांवों परसा इमाद, रीवा, औसान कुइयाँ, सोतवा का चयन अध्ययन क्षेत्र के रूप में किया गया है ।

निदर्शन प्रक्रिया

निदर्शन प्रक्रिया को निम्न बिन्दुओं में प्रदर्शित किया गया है-

1. जिले का चयन
2. तहसील का चयन
3. गाँव का चयन
4. उत्तरदाताओं का चयन

1. **जिले का चयन** - उत्तर प्रदेश राज्य में 75 जिले हैं जिसमे से शोध कार्य के लिए सिद्धार्थनगर जिले का चयन उद्देश्यपूर्ण रूप से किया है क्योंकि यह जिला समय और धन की बचत के द्रष्टिकोण से आवश्यक जानकारी को एकत्र करने में सहायक था ।
2. **तहसील का चयन** - सिद्धार्थनगर जिले में कुल 5 तहसील नौगढ़, बंसी, डुमरियागंज, इटवा, शोहरतगढ़ है । जिसमे से डुमरियागंज

तहसील का चुनाव अध्ययन के लिए किया गया क्योंकि यहाँ के स्वास्थ्यकर्ता से सम्पर्क करना तथा उचित जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त सम्भव था

3. **गाँव का चयन** - चयनित तहसील डुमरियागंज में से चार गाँव परसा इमाद, रीवा, औसान कुईया, सोतवा का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया ।
4. **उत्तरदाताओं का चयन** - चयनित गाँव में उद्देश्यात्मक रूप से महिलाओं तथा स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का चयन किया गया ।
5. सर्वप्रथम एनम की सहायता से 4 गाँवों में उन सभी महिलाओं की सूची तैयार की गई, जिनका प्रसव पिछले 6 महीने में हुआ है, प्रत्येक गाँवों से 25 महिलाओं का चयन व्यवस्थित प्रतिदर्शन द्वारा किया गया । इस प्रकार इस अध्ययन के लिए 100 उत्तरदाताओं का चयन किया गया ।

तथ्य संकलन एवं विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया। जिसमें प्राथमिक स्रोत के लिए चयनित सभी 100 उत्तरदाताओं से

साक्षात्कार अनुसूची भरवाया गया तथा साथ- साथ ही चयनित उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया गया । द्वितीयक स्रोतों में देश प्रदेश के स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति एवं मातृत्व स्वास्थ्य एवं पोषण सम्बन्धित सरकारी योजनाओं तथा कार्यक्रमों से सम्बन्धित सरकारी व गैर सरकारी प्रतिवेदनों, सर्वेक्षणों के आंकड़ों तथा शोध विषय से सम्बंधित सामग्री, जो विभिन्न आलेखों, प्रलेखों, पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग किया जाएगा । तथ्यों का विश्लेषण गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों से किया गया ।

गर्भावस्था के समय एक गर्भवती महिला के शरीर में कई प्रकार के परिवर्तन होते हैं जो कि शारीरिक और हार्मोनल होते हैं इस दौरान महिला को स्वास्थ्य व संतुलित आहार ग्रहण करना चाहिए क्योंकि

इस दौरान महिला को उचित पोषण की आवश्यकता होती है क्योंकि गर्भस्थ शिशु को भी महिला द्वारा ग्रहण किए गए भोजन से ही पोषण प्राप्त होता है जिससे कि भ्रूण का पूर्ण विकास हो सके। गर्भवती महिला के खाद्य पदार्थों में प्रोटीन, विटामिन और कैल्शियम तथा फोलिक एसिड जैसे तत्वों की भरपूर मात्रा होनी चाहिए क्योंकि इससे गर्भस्थ शिशु के विकास में सहायता प्राप्त होता है। एक स्वस्थ माता से ही एक स्वस्थ व सुरक्षित बच्चे का विकास होता है उचित पोषक तत्वों के द्वारा ही शिशु के शारीरिक और मानसिक विकास होने में सहायता प्राप्त होती है । भारतीय ग्रामीण समाज में शिशु मृत्यु दर की बढ़ोतरी का मुख्य कारण पोषक तत्व की जानकारी का अभाव तथा उन्हें पर्याप्त मात्रा में ग्रहण करने का अभाव रहा है।

ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं में गर्भावस्था के समय महिलाओं में पोषण की स्थिति अपेक्षाकृत निम्न होती है । क्योंकि उनको इसका ज्ञान ही नहीं होता है। गर्भावस्था के समय गर्भवती महिलाएं चिकित्सा सुविधाओं का प्रयोग करने में असमर्थ है क्योंकि इन्हें स्वास्थ्य केन्द्रों पर जाने के लिए उचित साधन का आभाव होता है। कई बार धार्मिक और सांस्कृतिक कारण से उन्हें स्वास्थ्य केंद्र जाने

से रोका जाता है। मुस्लिम समाज में आज भी यह मान्यता चल रही है की बच्चे भगवान् का दिया उपहार होते हैं इसलिए इसे आने से नहीं रोका जाना चाहिए । इस दर से की कही स्वस्थ केंद्र पर स्वास्थ्य कर्ता द्वारा उन्हें ऐसी कोई दावा न दी जाये जिससे भगवान का ये उपहार न आये ।

गर्भावस्था में गर्भवती की देखभाल में पारिवारिक सहभागिता ग्रामीण क्षेत्रों में कमी ही होती है क्योंकि लोग इसे एक सामान्य स्थिति मानते और उनके अनुसार इस समय किसी भी प्रकार की विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं होती है प्रसवपूर्व देखभाल से मातृत्व स्वास्थ्य व शिशु स्वास्थ्य को प्रभावित करता है ।

अपने शोध अध्ययन कार्य को करते समय यही तथ्य समे आया की गर्भावस्था के समय महिलाओं में पोषण की स्थिति बहुत खराब होती है महिलाये कुपोषण और कमजोरी से ग्रसित रहती हैं। गर्भावस्था के समय गर्भवती महिलाओं द्वारा बहुत ही कम मात्र में चिकित्सा सुविधाओं का प्रयोग किया जाता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- कुमारी, डॉ विमलेश(2006), 'मातृत्व एवं शिशुपालन' डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
- पाठक, इन्दू (2011), ' ग्रामीण महिला उत्थान ', यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
- महोपत्रो, संध्या रानी (2013), 'इनइक्वलिटी इन चाइल्ड हेल्थ केयर इन सेलेक्टेड स्टेट्स ऑफ़ इंडिया' एकादमी फाउन्डेशन ।
- जैन,जसबीर(2014), ' नारीवाद के देशज आधार: संस्कृति आत्मपरकता तथा शक्ति', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, जयपुर, कोलकाता, बेंगलोर।
- चलमर्स, बेवर्ली, विवियन मांगिटर्, रिचर्ड पोर्टर, (2001)' डब्लू एच ओ प्रिंसीपलस ऑफ़ पेरिनेटल केयर: द एसेंशियल अँन्टीनॅटल पेरिनेटल, पोस्टपार्टम केयर कोर्स' सितम्बर ।
- मिश्रा, विनोद और रोबर्ट डी. रेहेरफोर्ड,(2006), 'द इफ़ेक्ट ऑफ़ अँन्टीनॅटल केयर ऑन प्रोफेशनल असिस्टेंस एट डिलीवरी इन रूरल इंडिया', मार्च ।

- जेनेट, अबोजे ओगुंडैरो (2016), 'सोसिओ-कल्चरल चैलेंजेजस इन अस्सेसिंग अँन्टीनॅटल केयर बया प्रेग्नेंट फुलानी वीमेन इन इबरापा सेंट्रल गवर्नमेंट ओयो स्टेट नाइजीरिया' समाजशास्त्र विभाग, इबादन विश्वविद्यालय, नाइजीरिया ।
- कृष्णराज, मैत्रेयी (2010), 'मदरहुड इन इंडिया', रौत्लेड्गे पब्लिकेशन्स, लन्दन, न्यूयार्क, नई दिल्ली ।
- सिंह, आदित्य, कुमार अभिषेक , प्रांजलि प्रजा, (2014), यूटिलाइजेशन ऑफ मैटरनल हेल्थ केअर अमंग एडोलसेंट मदर स इन अर्बन इंडिया', ग्लोबल हेल्थ एंड सोशल केयर यूनिट, स्कूल ऑफ हेल्थ साइंसेज और सोशल वर्क, पोर्ट्समाउथ विश्वविद्यालय, पोर्ट्समाउथ, यूनाइटेड किंगडम, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉप्युलेशन साइंसेज, मुंबई, भारत, सोशल रिसर्च इंस्टीट्यूट - आईआरएमबी इंटरनेशनल, नई दिल्ली, भारत ।
- लैशराम, जाँइन, थोडाओजम देवी उषा, देवी संयडम एच, (2013) 'नालेज एंड प्रैक्टिस ऑफ अँन्टीनॅटल केयर इन ए अर्बन, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, क्षेत्रीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान, लंपेलपत, इंफाल, मणिपुर ।

- पटेल, भाई बरुण, प्रणय गुरमीत, दत्तात्रेय रामकृष्ण सिनालकर, कपिल एच पंड्या, अजय महेन, नेहा सिंह, (2016), 'ए स्टडी ऑफ नॉवलेज एंड प्रक्टिस ऑफ अँन्टीनॅटल केअर अमाँग प्रेग्नेंट वीमेन अटेंडिंग अँन्टीनॅटल क्लीनिक एट टेरियरि केअर हॉस्पिटल ऑफ पुणे महाराष्ट्र सामुदायिक चिकित्सा विभाग, एएफएमसी, पुणे, महाराष्ट्र भारत ।
- बिसवाल, तपन, (2014), ' मानवाधिकार जेंडर एवं पर्यावरण ', विवा बुक्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, कोच्ची ।
- सिंह, वी. एन., सिंह जनमेजय, 2013, 'नारीवाद', रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, जयपुर, कोलकाता, बैंगलोर ।
- शर्मा, अर्चना, 2015, 'महिला एवं मानवाधिकार', रितू पब्लिकेशन, जयपुर ।
- चौधरी, पी,(1994) 'द वर्ल्ड वुमेन सिपिटग जेंडर इक्यूरांस इन रुरल हरियाणा' 1880, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली ।
- बोरा, आशारानी (1983), 'भारतीय नारी दशा एवं दिशा' , नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।

- मिश्र, मीरा (2016), 'कुपोषण की रोकथाम : महिला स्वास्थ्य की भूमिका' योजना फरवरी ।
- सिंह, अजय कुमार,(2012), 'ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति दृष्टिकोण', योजना, अक्टूबर ।
- स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय,(2011) 'एनुअल रिपोर्ट टू द पीपुल आन हेल्थ' दिसम्बर सी. बी. एच.आई नेशनल हेल्थ प्रोफाइल(2011) डायरेक्ट जनरल आफ हेल्थ सर्विसेज, दिल्ली ।
- सिंह, उमेश प्रताप, गर्ग, राजेश कुमार(2012), 'महिला सशक्तिकरण विभिन्न आयाम' अध्ययन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली ।
- वर्मा, अर्पिता(2017), 'विमेंस हेल्थ एंड न्यूट्रीशन: रोल ऑफ स्टेट एंड वोलंटरी ऑर्गनाइजेशन' रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली ।
- कुमार, राधा(2011), 'स्त्री संघर्ष का इतिहास', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
- स्वामिनाथन, एम(2011), 'आहार एवं पोषण', एन आर ब्रदर्स, इंदौर ।